IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# "कला इतिहास में अनुसंधान–एक विश्लेषणात्मक अध्ययन"

**डॉ. रमाकान्त गौत्तम**
**सहायक आचार्य**
**बियानी गर्ल्स कॉलेज,**
**विद्याधर नगर, जयपुर (राजस्थान)**

**सारांश**– "मनुष्य की रचना जो जीवन में आनन्द प्रदान करती है, कला कहलाती है।" कला का मनुष्य के मानसिक, बौद्धिक, शारीरिक, चारित्रिक, आत्मिक, व्यक्तित्व, सामाजिक, नैतिक, व्यावसायिक तथा दार्शनिक विकास के मूल्यों को ध्यान में रखकर निर्माण किया जाता है। कला इतिहास में हम उन कलाकृतियें का अध्ययन करते है, जेा हमें उस समय की संस्कृति के प्रचलन से अवगत कराती है तथा उसके पीछे के उद्देश्यों से हमें रूबरू कराती है। कला इतिहास में अनुसंधान किसी कलाकृति या कलाकृतियों में प्रयुक्त तत्त्वों, सिद्धांतों, सृजनात्मक पक्षों तथा उद्देश्यों को आधार लेकर की जाती है।

अनुसंधान की इस प्रक्रिया में हम समस्या का चयन, निरूपण एवं उसकी परिभाषा, सम्बन्धित सूचना का सर्वेक्षण, नवीन दत्तों का संग्रह, विश्लेषण तथा व्याख्या तथा किये गये कार्य का प्रतिवेदन आदि सभी पदों का प्रयोग करते है। किसी भी अनुसंधान में प्रदत्तों का संकलन मूल व गौण स्त्रोतों से किया जाता है। किंतु मूल प्रदत्त अनुसंधान की सत्यता व प्रतिष्ठा के लिये महत्वपूर्ण होते है। विभिन्न दृश्य कलाओं का उनकी समस्या के आधार पर संकलन व विश्लेषण कर एक परिसिमन में अध्ययन किया जाता है, जो हमारे अनुसंधान का उद्देश्य है। अतः वर्तमान की समस्याओं को दूर करने हेतु अतीत के अनुभवों से लाभ उठाना कला इतिहास के अनुसंधान की उपयेागिता को तर्क–संगति प्रदान करता है।

**मुख्य बिंदु– कला इतिहास, अनुसंधान, उद्देश्य, समस्या का चयन, परिकल्पना, प्रदत्त संकलन, विश्लेषण, प्रतिवेदन लेखन, प्राथमिक व द्वितियक प्रदत्त।**

## मूल शोध–पत्र

कला शब्द ''कल्'' धातु से बनवा है, जिसका शाब्दिक अर्थ है– सुन्दर, अर्थात् जो आनन्द उत्पन्न करती है। प्रत्येक कलाकृति युग, व्यक्तित्व और परिस्थिति को व्यक्त करती है। इसीलिये प्रयोजनानुसार कला को अलग–अलग प्रकारों में व्यक्त करने का प्रयास किया गया है। भाारतीय साहित्य का अवलोकन करने पर अधिकतर कलाये, 64 प्रकार की मानी गई है। इन सभी स्वरूपों में सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्, कल्याण व भावाभिव्यक्ति का समावेश देखने को मिलता है। भारतीय कला को धर्म से भी जोड़ा गया है। विष्णु धर्मोत्तर पुराण के चित्रसूत्र में कहा गया है–

कलाना प्रवरं चित्रं धर्म कामार्थ मोक्षदं।

माँगल्यं प्रथमम् हैतं गृहे यत्र प्रतिष्ठितम्।।

अतः कला उद्देश्यपूर्ण है, जिसमें मनुष्य के मानसिक, बौद्धिक, शारीरिक, चारित्रिक, आत्मिक, व्यक्तित्व, सामाजिक, नैतिक, व्यावसायिक तथा दार्शनिक विकास के मूल्यों को ध्यान में रखकर इसका निर्माण किया जाता है। जिस प्रकार कलाकृतियाँ किसी सभ्यता और संस्कृति की निधि होती है, उसी प्रकार इतिहास भी किसी संस्कृति और सभ्यता के विकास की कहानी होती है। कला इतिहास से हम उन कलाकृतियों का अध्ययन करते है, जो हमें उस समय की संस्कृति के प्रचलन से अवगत कराती है तथा उसके पीछे के उद्देश्यों से हमें रूबरू कराती है। इन्हीं उद्देश्यों को आधार लेकर वर्तमान परिदृश्य में कलाकृतियों के महत्व का अध्ययन हम कला इतिहास में अनुसंधान के रूप में करते है। इस प्रक्रिया में हम समस्या का चयन, निरूपण एवं उसकी परिभाषा सम्बन्धित सूचना का सर्वेक्षण, नवीन दत्तों का संग्रह, विश्लेषण एवं व्याख्या तथा किये गये कार्य का प्रतिवेदन– आदि सभी पदों का प्रयोग करते है। कलात्मक प्रदत्तों के संकलन में हम चित्र, मूर्ति, भित्ति–चित्र, पट्चित्र, ताड़–चित्र, बर्तन–भाण्डे, अलंकरण, वस्त्र–आभूषण आदि विभिन्न कलाकृतियों को ले सकते है, जो हमारी विषय–वस्तु से सम्बन्धित हो।

प्रत्येक अनुसंधान में पुस्तकालय अनुसंधान, क्षैत्रीय अनुसंधान तथा प्रयोगशाला अनुसंधान (विश्लेषण) के सोपान से गुजरा जाता है। कला के ऐतिहासिक अनुसंधान की निम्न विशेषतायें होती है–

1. यह अतीत की घटनाओं, विचारों तथा कार्यों का वैज्ञानिक अध्ययन करता है।
2. यह भी अन्य के समान परिकल्पनाओं, प्रदत्तों, साक्ष्यों तथा प्रतिवेदनों का सहारा लेता है।
3. इसके लिये प्रमाण पुस्तकालयों, संग्रहलायों, प्राचीन ऐतिहासिक स्थलों, विशिष्ट व्यक्तियों, पुरातत्त्वीय उत्खनन कार्यों तथा शिलालेखों आदि से प्राप्त होते है।
4. इनका मुख्य उद्देश्य अतीत के अध्ययन के आधार पर वर्तमान को समझना, वर्तमान की समस्याओं का समाधान तलाशना, नये आयाम स्थापित करना, अतीत की घटनाओं का सही स्वरूप प्रस्तुत करना तथा भविष्य के लिए पूर्व कथन स्थापित करना है।

5. किसी भी कलात्मक अनुसंधान में कलाकृति का अध्ययन, उसमें प्रयुक्त कला तत्वों (रेखा, रंग, रूप, तान, पोत, अंतराल), षडांगो (रूपभेद, प्रमाण, भाव, लावण्य योजना, सादृश्य, वर्णिका भंग), संयोजन के सिद्धांतों (सहयोग, सांमजस्य, संतुलन, प्रवाह, प्रभाविता, प्रमाण तथा परिप्रेक्ष्य), उसमें निहित सृजनात्मक पक्षों व उद्देश्यों के आधार पर की जाती है।

**कला इतिहास में अनुसंधान के सोपान**– कला इतिहास में अनुसंधान को सम्पन्न करने के लिए निम्न सोपानों की आवश्यकता होती है–

1. समस्या का चयन
2. परिकल्पनाओं का निर्माण
3. प्रदत्त संकलन
4. प्रदत्त की आलोचना
5. इतिहास या प्रतिवेदन लेखन

कला इतिहास के अनुसंधान में शोधकर्त्ता समस्या का चयन, पूर्वानुभव, ज्ञान, योग्यता व अध्ययन के आधार पर किसी व्यक्ति, संस्था, समाज या राष्ट्र के कलात्मक इतिहास के किसी पक्ष या घटना सम्बन्धित किसी पहलू पर कर सकता है। समस्या का परिसीमन भी शोधकर्त्ता को अपने भटकाव से बचाता है, साथ ही समस्या की उपयेागिता तथा उससे सम्बन्धित उपलब्ध सामग्री को ध्यान में रखकर ही समस्या का चयन करना चाहिए।

समस्या के निर्धारण के पश्चात् उसकी परिकल्पना का निर्माण किया जाता है, जिसमें अतीत की घटनाओं व तथ्यों के सम्बन्ध में नई जानकारियाँ प्रदान की जाती है, जो वर्तमान के लिये उपयोगी, निष्पक्ष व स्पष्ट हो। हर एक अनुसंधान को सिद्ध करने के लिये प्रमाण की आवश्यकता होती है, जिसे हम प्रदत्त (डाटा) संकलन द्वारा पूर्ण करते है। प्रदत्तों के स्त्रोत दो प्रकार के हो सकते है– मूल स्त्रोत तथा गौण या द्वितीयक स्त्रोत। मूल स्त्रोत अध्ययन के लिये ठोस, प्रमाणिक तथा सशक्त आधार प्रस्तुत करते है। इसके बाद प्रदत्तों का आलोचनात्मक विश्लेषण किया जाता है। मूल्यांकन की वह प्रक्रिया– जिसका उपयोग काम में आने वाले तथा विश्वसनीय दत्तों को प्राप्त करने हेतु किया जाता है, जिन्हें ऐतिहासिक प्रमाण कहते है, ऐतिहासिक आलोचना के नाम से जानी जाती है।

प्रदत्तों की आलोचना में पूर्वागृह, धार्मिक विचार, राजनैतिक पक्षपात, स्वयं का स्वार्थ, व्यक्तिगत अभिमान या महत्वाकांक्षा, साहित्यिक आडम्बर, विषय–वस्तु के प्रति अज्ञानता असत्य कहने की कमजोरी आदि से बचना चाहिए। ऐतिहासिक अनुसंधान कार्य के प्रतिवेदन लेखन में प्रलेखन अन्य अनुसंधान के समान होता है। इसमें फुटनोट्स तथा विस्तृत संदर्भ ग्रंथावली प्रस्तुत करने मे विभिन्न सोपान (लेखक का उपनाम, लेखक का नाम, ग्रंथ का नाम, पब्लिकेशन वर्ष) होते हैं।

कला इतिहास के अनुसंधानकर्त्ता का यह कर्त्तव्य है कि वह पुराने दत्तों की नवीन रूप से व्याख्या करें या नवीन ऐतिहासिक दत्तों को एकत्रित करके यथा सम्भव सर्वोतम ढंग से उनकी व्याख्या करें। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अनुसंधान की प्रासंगिकता तथा उपयोगिता को स्पष्ट करें। साथ ही अनुसंधानकर्त्ता को अपनी लेखन शैली में सरलता, श्रेष्ठता, शक्ति, स्पष्टता तथा वस्तुनिष्ठता जैसे गुणों का भी समावेश करना चाहिये। वर्तमान की समस्याओं को दूर करने हेतु अतीत के अनुभवों से लाभ उठाना, कला–इतिहास के अनुसंधान की उपयोगिता को तर्क–संगति प्रदान करता है।

इस प्रकार कला इतिहास के अनुसंधान से छात्रों के कलात्मक ज्ञान को प्रकाश में लाने के लिये निरीक्षण, स्वतंत्र भाव–प्रकाशन, क्रियात्मक, रचनात्मक, अनुकरण, वर्णनात्मक, प्रदर्शनात्मक, प्रतीकात्मक, अलंकरण, स्मृति और कल्पना आदि प्रवृतियों का विकास किया जाता है।

अतः कला एक क्रिया है, जो व्यावहारिक या उपयोगी मूल्यों के अतिरिक्त कलाकार को और उन व्यक्तियों को जो उसके कार्य में दर्शक, श्रोता अथवा सहयोगी के रूप में अंशग्रहण करते हैं, संतुष्टि प्रदान करती है। यही सौन्दर्यपूर्ण या ललित तत्व है, जो कला को संस्कृति के दूसरे पक्षों से पृथक् करता है।

**संदर्भ ग्रंथः–**


1.शर्मा, एस.के. तथा अग्रवाल, आर.ए. – रूपप्रद कला के मूलाधार, इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ 2000

2.कासलीवाल, मीनाक्षी– ललितकला के आधारभूत सिंद्धात, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2007

3.सांखलकर, र.वि– आधुनिक चित्रकला का इतिहास, राज. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर 2008

4. सिंह, डॉ.रामपाल तथा शर्मा, डॉ.ओ.पी.– शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 2008

5. सिडाना, डॉ. अशोक कुमार – कलाशिक्षा एवं कार्यानुभव शिक्षा–शिक्षण, शिक्षा प्रकाशन, जयपुर 2007

6.शर्मा,आर.के. तथा शर्मा, नरेन्द्र कुमार–कला शिक्षा शिक्षण, राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा, 2008

7. पाण्डे, पूर्णिमा– कला के मूलतत्व और सिद्धान्त, जागृति प्रकाशन, अलीगढ 2002

8.हैवेल, ई.वी– हैण्डबुक ऑफ इंडियन आर्ट

9.श्रीवास्तव, ए.एल– भारतीय कला, इलाहाबाद पब्लिकेशन 2002

10.गुप्त, जगदीश– भारतीय चित्रकला के पदचिन्ह, दिल्ली पब्लिकेशन 1961

11गोस्वामी, प्रेमचन्द– आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तंभ, रा.हि.ग्र.अ.जयपुर 1995